सकारात्मक परिवर्तन का आधार मूल्य-निष्ठ मीडिया

जन संचार के समाचार पत्र, पत्रिकाएं, रेडियो, टी.वी., चलचित्र जैसे माध्यमों का प्रभाव केवल सामाजिक परिवर्तनों पर निगरानी रखने वा उनको प्रतिबिंबित करने और उनका अनुसरण करने तक ही सीमित नहीं किन्तु वे सामाजिक-आर्थिक, राजनितिक, सांस्कृतिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक परिवर्तन की प्रक्रिया को वेग देकर प्रेरीत करने वाले शक्तिशाली माध्यम भी है।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व मीडिया जो मुख्यत: प्रेस के रूप में था उसकी विचारधारा और घ्येय देशभक्ति एवं राष्ट्रवाद पर आधारित थे। किन्तु आज़ादी मिलने के पश्चात् का समय जन संचार माध्यमों के मामलों में बढ रहे निजी स्वार्थ (व्यक्तिगत हित), व्यावसायिकता, उपभोक्तावाद, भोगवाद, विषयासक्ति, पीत-पत्रकारिता, राजनितिक सम्बल एवं नौकरशाही की दखल जैसे प्रसंगो का साक्षी रहा है।बेशक, प्रेस ने, विशेषकर प्रादेशिक समाचार पत्रो ने प्रादेशिक एवं स्थानीय हितों, समस्याओं और पीड़ाओं उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अलावा कई राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों, पत्रिकाओं एवं निजी इलेक्ट्रोनिक मीडिया ने राष्ट्र के विधान तंत्र, शासन तंत्र एवं न्याय तंत्र की ज्यादतीओं पर निगरानी रखकर उचित संतुलन बनाये रखने वाले प्रबल प्रभावशाली समूह एवं शक्तिशाली चौथे स्तम्भ के रूप में कार्य किया है। शासन के नियंत्रण एवं निरीक्षण में प्रवृत्त टी.वी., रेडियो और चलचित्र आदि ने राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक सामंजस्य तथा भारतीय समाज के भीतरी इलाको में विकास-कार्यों को बढावा देने के उपरान्त प्रजा को सूचना, शिक्षण और मनोरंजन पहुँचाने की उपयुक्त सेवाएं प्रदान की है।

किन्तु साथ मे ऐसा भी लग रहा है कि भारत में सार्वजनिक प्रसारण सेवा पर अपनी उत्कृष्ठ छवी बनाने के बजाए आय बढाने का भारी दबाव है। विज्ञापनों की आय बढाने के लिंये चल रहे निरंतर प्रयत्नों का प्रभाव निश्चित ही कार्यक्रमों की सामग्री से लेकर उनकी प्राथमिकता पर पड रहा है। दुसरी ओर सकारात्मक पक्ष यह है कि ऐसी कई व्यवसायिक चैनल्स् भी है जो बहुत उपयुक्त थोडे से ऐसे कार्यक्रम भी दिखा रही है जिन्हें जन-सेवा के वर्ग में रखे जा सकते हैं। वर्तमान नीतियाँ सकारात्मक समजिक बदलाव लाने में अथवा असहायों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में इतनी सक्षम नहीं है। ऐसा लग रहा है कि जनता की अमानत मीडिया नागरिकों की बजाए उपभोक्ताओं के लिये ही कार्यरत है।

आत्म-अनुशासन एवं मूल्य-निष्ठता

प्रौद्योगिकी में हो रही प्रगति के साथ ही कार्यक्रम की सामग्री पर किसी भी प्रकार की नियंत्रणा कठीन होती जा रही है और यदि उससे सम्बन्धित कोई कानून है भी तो वह पूर्ण रूप से बाध्यकारक न रहकर केवल सूचनात्मक ही रह गया है। ऐसे में कार्यक्रम की सामग्री पर नियंत्रण रखने में प्रशासन के साथ ही मीडिया उद्योग की स्व-अनुशासन द्वारा भागीदारी की बहुत आवश्यकता है। इसलिए, जनता तक पहुँचाये जा रहे सन्देशों की प्रकृती और सामग्री का निर्धारण करना सरकार की जिम्मेवारी है तथा जन संचार माध्यमों के मालिकों,

नियामको, प्रबन्धकों एवं पहरेदारों परअवलम्बित है। क्या ये सन्देश भारतीय समाज की संस्कृती, विरासत, मूल्य एवं लाक्षणिकताओं के अनुरूप है या नहीं? क्या ये सूचना, समाचार, दृश्य एवं कार्यक्रम समाज और लोगों के सर्वांगीण स्वास्थ्य, सामन्जस्य, सुख और स्थाई विकास को बढावा देने वाले, सकारात्मक एवं रचनात्मक है या उनके लिये हानिकारक, उन्हें दुर्बल और कंगाल बनाने वाले है? – इन प्रश्नों के उचित उत्तर जीवन और समाज की उस गुणवत्ता और प्रकृती को निश्चित करते है जिसका निर्माण हम स्वयं के लिये और आने वाली पीढ़ी के लिये करना चाहते हैं।

मीडिया कर्मीयों को अपने व्यवसाय को महज व्यवसाय वा नित्यकार्य के बजाए एक चुनौति अथवा सर्वांगीण ध्येय के रूप में लेना चाहिये जिसे वे धर्मयोद्धे की तरह साहस, दृढ़ विश्वास, आत्मसमर्पण, निस्वार्थता और बलिदान से साकार कर सकते हैं। मीडिया कर्मीयों की भूमिका एवं जिम्मेवारी केवल समकालीन स्थिति को प्रतिबिंबित करने वा उजागर करने की ही नहीं किन्तु मानव पुरूषार्थ के सभी आयामों में प्रेरक, उद्दिपक और परिवर्तन-कारक के रूप में रचनात्मक कार्य करने की है। कुछ लोगों की समृद्धि को बढावा देने के बजाए सभी की मूल आवश्यकताओं को परिपूर्ण करने वाली सामाजिक-आर्थिक प्रणाली को आगे बढाने की गतिशील एवं त्रासदायक फर्ज निभाने के लिये तथा पीड़ीत समुदाय के नैतिक एवं भौतिक उत्थान और राष्ट्र के सर्वांगिण विकास के लिये ईमानदारी, एकता, निर्भिकता, सदाचार, मानवता, सत्यता, त्याग, समर्पणमयता जैसे सच्चे गुणों की मीडियाकर्मीयों में आवश्यकता है। समानता, निष्पक्षता एवं न्यायपूर्णता पर आधारित समाज बनाने के लिये मीडिया व्यवसायिको को सामाजिक-आर्थिक, राजनितिक, नैतिक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिक परिवर्तन एवं कर्तव्यों की मूल वास्तविकताओं के अनुसार अपने दृष्टिकोण को नई दिशा और अपनी प्राथमिकताओं को नया क्रम देने की आवश्यकता है।

तेजी से बदल रहे समय, प्रोद्योगिकी एवं परिस्थिति के साथ जन संचार माध्यमों के प्रकृति, आकार, कार्य पद्धति और मूल्यों में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुए है, फिर भी कई निश्चित अपरिवर्तनीय शाश्वत मूल्य है जो मीडिया व्यवसायिकों के मूल सिद्धान्तों एवं दीर्घकालीन हितों (स्थिरता एवं विकास) का आधार है। यदि हमारा लक्ष्य मूल्य-निष्ठ जीवन एवं बेहतर समाज वाले नये विश्व में प्रवेश करने का है तो सत्य, विश्वसनियता, सद् भावना, स्पष्टता, यथार्थता, वस्तुनिष्ठता, स्वतंत्रता, निष्पक्षता आदि अत्यावश्यक मूल्यों को पत्रकारिता जगत में बढावा देने और आचरण में लाने की बहुत आवश्यकता है।

अपने व्यवसायिक हितों को लोगों के सम्पूर्ण समाजिक, आर्थिक, राजनितिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, नैतिक कल्याण के साथ संतुलित करने की अर्थपूर्ण प्रणाली विकसित करने के लिये मीडिया कर्मीयों में किसी प्रकार एवं मात्रा में आत्म-अवलोकन, आत्म-नियंत्रण, आत्म-अनुशासन, आत्म-जागृति, सांस्कृतिक-राष्ट्रीय एवं वैश्विक चेतना की तीव्र आवश्यकता है। विदेशी सेटिलाईट चैनलों द्वारा नैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रदुषण फैलाने के बढ़ते अपराधों की रोकथाम करने की तत्काल आवश्यकता है जिसे हमारे मीडिया मुघल मूल्य-आधारित विषयों, शिक्षाओं, प्रयोगों तथा हमारी युग-प्राचीन आध्यात्मिक विरासत, बहुमूल्य परम्पराओं, कला एवं संस्कृति, स्वस्थ प्रकृति, उच्च आदर्शो तथा सद्भावना पूर्ण जीवन पर

आधारित कार्यक्रमों का पर्याप्त मात्रा में प्रकाशन, प्रसारण एवं प्रक्षेपण द्वारा प्रभावशाली प्रत्युत्तर देकर पूर्ण कर सकते हैं।

ब्रह्माकुमारी विद्यालय में सिखाये एवं आचरण में लाये जा रहे भारत के प्राचीन ज्ञान, जीवन-मूल्य एवं राजयोग ध्यान साधना को तरीकों को उजागर करने से मीडिया-कर्मीयों की चेतना स्वच्छ एवं अन्तरात्मा शुद्ध बनकर उनमें सकारात्मक चिंतन, परखना, दृढता एवं निर्णय करने की शक्तियाँ विकसित होने के उपरान्त उन्हें संकीर्णता, स्व-केन्द्रिता, नकारात्मक अभिगम, सांसारिक प्रवृत्ति और मूल्यों से विपरित निजी, व्यावसायिक एवं सार्वजनिक जीवन के दबाव-खिंचाव से ऊपर उठकर मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से तनाव तथा संघर्षों से मुक्त रहने के लिये पर्याप्त मात्रा में आत्म-शक्ति मिलती है।

आयोजक

1936 में स्थापित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय विश्वभर में मानविय, नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को व्यक्तिगत, व्यावसायिक तथा सामाजिक तौर पर बढावा देने हेतु पूर्ण समय की जन-हितैषी सेवाएं प्रदान कर रहा अन्तर्राष्ट्रीय, अशासकीय, सामाजिक-आध्यात्मिक प्रशिक्षण संस्थान है। भारत सहित दुनिया के 87 देशो में यह संस्थान अपने 6500 सेवाकेन्द्रों के द्वारा मूल्य-शिक्षण, चरित्र-निर्माण, वैश्विक शान्ति एवं सहकार, महिला सशक्तिकरण, स्व-अनुशासन द्वारा नेतृत्व, प्रदुषण-रहित वातावरण, तनाव-मुक्त जीवन, सकारात्मक चिंतन, व्यक्तित्व विकास, सर्वांगीण स्वास्थ्य, नशीली चीजें, शराब तथा धुम्रपान आदि व्यसनों से मुक्ति, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राजयोग ध्यान-साधना जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है।

मीडिया प्रभाग

राजयोग शिक्षा एवं अनुसंधान के 17 प्रभागो में से एक है मीडिया प्रभाग। जन संचार क्षेत्र से सीधे जुडे हुए अथवा मीडिया से समन्धित प्रवृत्तियों में उत्कट रूची रखने वाले कई ब्रह्माकुमार-कुमारीयाँ देश-विदश में समय प्रति समय नियमित रुप से मूल्य-आधारित समाचार एवं कार्यक्रमों का प्रकाशन, प्रसारण तथा प्रक्षेपण की योजनाओं को प्रिन्ट एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया के नेटवर्क द्वारा पूर्ण कर रहे हैं।

मीडिया प्रभाग राष्ट्र के बहुमूल्य ज्ञान, संस्कृति, मूल्यों, जीवन-शैली एवं राजयोग ध्यान-साधना के शिक्षण-प्रशिक्षण एवं सेवाओं के प्रचार प्रसार में सक्रीय रुप से जुडा हुआ है। प्रभाग द्वारा तैयार किया गया मूल्य-निष्ठ पत्रकारिता का एक इन्टरेक्टिव व्यवसायिक पाठ्यक्रम भी मीडिया से संलग्न सर्व संस्थानों एवं लोगों के लिए उपलब्ध है।

प्रभाग के मुख्य उद्देश्य

1. मीडियाकर्मीयों को अपने व्यवसाय में व्याप्त नकारात्मकता को समाप्त कर सकारात्मक मूल्यों को बढावा देने की चुनौतियों को स्वीकारने हेतु प्रेरित करना।

2. धार्मिक सद्‌भावना, राष्ट्रीय एकता एवं अखंडितता को बढावा देकर लाखों निर्बल-पीड़ितों के हितों की रक्षा करने का उत्तरदायित्व निभाने हेतु मीडियाकर्मीयों को प्रोत्साहित करना।

3. मीडिया में व्याप्त झूठी, पक्षपाती एवं गोपनीयता का भंग करने वाली खबरें, पित-पत्रकारिता, भोगवाद, हिंसा, अश्लिलता एवं असभ्यता का अनुचित प्रचार जैसी अयोग्य पवृत्तियों को निरुत्साहित करना।